''आगरा घराने की तराना गायन शैली
का
विश्लेषणात्मक अध्ययन''

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
आगरा से संगीत में पीएच॰ डी॰ की उपाधि की
आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत
शोध – प्रबंध
की रूपरेखा

2014

पथ प्रदर्शक :

डॉ॰ (श्रीमती) सुधा सहगल
असि॰प्रो॰ संगीत–विभाग,
कला संकाय दयालबाग़ आगरा

शोधकर्त्री:

सोनल कौशिक
पीएच॰ डी॰ (संगीत गायन)

विभागाध्यक्षः
प्रो॰ (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी
संगीत विभाग, कला संकाय

संकाय प्रमुखः
प्रो॰ (श्रीमती) उर्मिला आनंद
संस्कृत विभाग कला संकाय

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान(डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़ आगरा–5

''आगरा घराने की तराना गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

भूमिका

आगरा घराने का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अत्यंत विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान है। इस घराने में व्यवहृत गायन शैलियों के सन्दर्भ में क्रियात्मक एवं सैद्धान्तिक विशिष्टता पायी जाती है। इस घराने में जहाँ एक ओर ध्रुपद, धमार, ख्याल, नोम तोम के आलाप, बोलबाँट की ठुमरी प्रसिद्ध हैं वहीं दूसरी ओर तराना गायन शैली की भी अपनी विशेषता है।

आगरा घराने में व्यवहृत नोम तोम के आलाप कंठ धर्म को संस्कारित करते हैं तथा दूसरी ओर नोम तोम जैसे शब्द भी एक विशिष्ट धार्मिक स्त्रोत को इंगित करते हैं। यूं तो ''नोम तोम'' ये दो शब्द अभिधान स्वरूप आगरा घराने में आलाप हेतु प्रयुक्त किये जाते हैं किन्तु इनके अतिरिक्त त, न न न, नूम, त नूम, देरे ना, री न न न, री नूम न न न प्रयोग किये जाते हैं जो ''तराना गायन शैली से ही ग्रहण किये गये हैं किन्तु आलापेतर इस गायन शैली का अपना भी एक प्राचीन इतिहास है। यह गायन शैली हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक ऐसी लोकप्रिय विधा है जिसका प्रचलन अनेक वर्षों से चला आ रहा है। वैसे तो इसमें निरर्थक शब्दों जैसे त न न न, दीम् दीम् तो, दिर दिर, ना द्रे द्रे द्रे, य ल लि, याला, दारा, दिल का प्रयोग होता है किन्तु सुधि गायक मनस्वी श्रोता सार्थक शब्दों को इसमें स्वतः ही ढूँढ लेते हैं त न न न री के लिए वे हरि का स्मरण कर लेते हैं, तोम् त न न न हेतु ''तुम हो, मैं नही'' इस प्रकार वे इन शब्दों की व्याख्या कर लेते हैं, या ल लि अ लि के लिए भी वे अली, मौला, खुदा अथवा हरि का स्मरण करते हैं। वस्तुतः तराना शैली के उद्‌भव का कारण ''क़ौल'' एक सूफियाना गायन शैली है जिसे अमीर खुसरो ने सर्वप्रथम रचित किया–

स्थायी–

मन कुन्तो मौला

(मेरा गुरू कौन)

फलियुन मौला

(मौला मेरा गुरू)

अंतरा–

त न न, त न न न, त न न न देरे ना,

(दारा दिल दारा दिल दारा दिल दारे दानी)

दीम् दीम् त न न न, त न दे रे ना, या ल

(हम तुम तननन, तननन, दे ऽ ऽ ऽ ऽ)

लि य, ल लि य लि, त न न न, ना ऽ ऽ ऽ

(यललि यललि याला, रे ऽ ऽ ऽ ऽ)

जैसा स्पष्ट है कि उपर्युक्त रचना के अंतरे में तराने के बोल निहित हैं। अमीर खुसरो ने तराना गायन शैली की रचना तराना रचित करने की दृष्टि से तो निश्चित रूप से नहीं की थी किन्तु उल्लेख स्पष्ट करते हैं कि इसके बोलों यथा यलि, या अलि, न न री, न र हरि के पार्श्व में कुछ न कुछ आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य अवश्य हैं। दूसरी ओर अमीर खुसरो पर भारतीय धर्मों, संस्कृति एवं संगीत का प्रभाव भी अवश्य रहा है। हो सकता है ये बोल हिन्दू एवं सूफी धर्म एवं संस्कृति का मिश्रण हों यद्यपि कौल के अंतरे के ये शब्द निरर्थक प्रतीत होते हैं किन्तु इनमें आध्यात्मिक, सांगीतिक, सांस्कृतिक गहराई निश्चित रूप से विद्यमान है।

अमीर खुसरो (तेरहवी शताब्दी) के पश्चात् यह "क़ौल" गायन शैली स्वतंत्र रूप से तो दरगाहों एवं मस्जिदों में व्यवहृत होती रही तथा प्रचलित भी रही तथा इसके गाने वाले क़व्वाल कहलाये किन्तु इसमें निहित तराना गायन शैली उस समय कोई स्थान न बना सकी और न ही उसे तराना नाम मिला किन्तु क़ौल के अंतरे में होते हुए भी कब यह एक विधा बन गयी और तराना नाम से प्रचलित हुई? तथा आगरा घराने में तो इसने नोम तोम के आलाप की एक सुदृढ शैली विकसित कर डाली, इन प्रश्नों के उत्तर अभी पूर्णरूपेण ज्ञात नहीं हैं हो सकता है इसमें प्रयुक्त होने वाले शब्दों के समकक्ष इसका नामकरण हुआ हो। अनुमानित है कि जब से घराने (सत्रहवी शताब्दी) अस्तित्व में आये तब से यह शैली घराने के सन्दर्भ में स्वतंत्र रूप से प्रसिद्ध हुयी। कौन से घराने अथवा कलाकारों या उस्तादों द्वारा इसे क़ौल से पृथक कर तराना नाम से सम्बोधित व प्रचलित किया? यह भी अज्ञात है एवं शोध का मुख्य बिन्दु भी है। इसके ऐतिहासिक उल्लेख नाममात्र को प्राप्त होते हैं किन्तु लगभग सभी घरानों में इस शैली का प्रयोग किया जाता रहा और होता आ रहा है। आगरा घराने में नोम तोम के आलाप से लेकर तराना गायन शैली का क्या स्वरूप रहा? यह भी शोध का विशेष बिन्दु है।

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण **से** ज्ञात हुआ कि तराना गायन शैली के सन्दर्भ में साहित्य का अभाव है। साथ ही हस्तलिखित अथवा मुद्रित पुस्तकों का भी अभाव है। तराना के विषय में आंशिक रूप से जानकारी तो कई पुस्तकों में अवश्य प्राप्त होती है तथा **एक** ही पुस्तक में तराना के विषय में ऐतिहासिक जानकारी भी प्राप्त होती है –

- **तराना अंक –** लेखक श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग – संगीत कार्यालय हाथरस

यद्यपि इस पुस्तक में तरानों का संकलन अधिकांश रूप से किया गया है तथा ऐतिहासिक परिचय के विषय में जानकारी भी दी गयी है किन्तु शोध की दृष्टि से यह जानकारी अल्प है।

अग्रलिखित पुस्तकों में भी तराना विषय पर एक या दो प्रपत्र अथवा कतिपय बन्दिशें व उल्लेख पाये गये हैं जैसे –

- **संगीत चिन्तामणि –** पं॰ ओमकार नाथ ठाकुर

- **आगरा घराना परंपरा गायकी और बन्दिशें –** रमण लाल मेहता

- **अभिनव गीतांजलि – रामाश्रय झा ''रामरंग'' (भाग 1 – 5)** में कई रागों में तराने की बन्दिशें संकलित हैं।

- **संगीत पत्रिकाः** संगीत कार्यालय हाथरस द्वारा प्रकाशित मई 1980,

- **क्रमिक पुस्तक मालिका –** भातखण्डे (1–6) अंको में विभिन्न रागों में तराना गायन शैली की केवल बन्दिशें ही प्राप्त होती हैं। इनके अतिरिक्त तराना विषय सम्बन्धी साहित्य का अभाव है।

उपरोक्त साहित्य सामग्री में शोध के सन्दर्भ हेतु प्रचुर विषय सामग्री का नितान्त अभाव है। आगरा घराने की तराना गायन शैली पर तो वस्तुतः कहीं प्रकाश नहीं डाला गया है। मौखिक रूप से आगरा घराने में सीखे गए एवं गाए गए तराने कहीं पर भी संकलित नहीं हैं। क्रमिक पुस्तक मालिका में भी प्रत्येक राग में एक या दो तरानों का संकलन है किन्तु आगरा घराने के कौन – कौन से तराने (आगरा घराना परंपरा गायकी और बन्दिशें: रमण लाल मेहता के अतिरिक्त) इन पुस्तकों में संकलित किये गये हैं यह भी अज्ञात है।

कहने का तात्पर्य यही है कि यह गायन शैली साहित्यिक एवं क्रियात्मक रूप से संरक्षित भी नहीं है जो कि शोध का सबसे बड़ा महत्वपूर्ण बिन्दु है। आगरा घराने के अनेकों कलाकारों को तराना विधा की अनगिनत बन्दिशें कंठस्थ होंगी किन्तु वे सब मुद्रित एवं प्रकाशित अवस्था में नहीं हैं। अतः शोध एवं ज्ञानार्जन (संगीत जिज्ञासुओं एवं विद्यार्थियों) हेतु इस शैली को विभिन्न कलाकारों द्वारा रिकॉर्डिंग के माध्यम से संरक्षण करना भी शोध का

महत्वपूर्ण बिन्दु होगा साथ ही साथ आश्चर्य भी है कि इस विषय पर पूर्व में कभी शोध कार्य करने के लिए सोचा नहीं गया!

प्रस्तावित शोध के परिप्रेक्ष्य में तराना गायन शैली का इतिहास क्या है? कब यह अपने अस्तित्व में पूर्णरूप से आयी? कौन से घराने में इसका उद्भव हुआ? तथा कैसे विकास हुआ? कौन–कौन से कलाकारों ने इसके विकास में योगदान दिया? इस गायन शैली में सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक पक्ष क्या रहे? कैसे आगरा घराने में नोम तोम की शब्दावली जो तराना गायन शैली से ग्रहण की गई, आलाप हेतु प्रयुक्त होने लगी? अब वर्तमान में आगरा घराने में नोम तोम आलाप तथा तराने का क्या अस्तित्व है? तराना गायन शैली की बन्दिशों का क्या स्वरूप रहा? कौन से बिन्दु ध्यान में रखकर बन्दिशों की रचना की जाती रही?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए तथ्यों की खोज करने के लिये शोध प्रबन्ध हेतु निम्न विषय का चयन किया गया है –

विषय कथनः–

"आगरा घराने की तराना गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

तराना –

1. पु. (फा0 तरान) एक प्रकार का चलता गाना जिसमें सितार, नाच आदि के बोल होते हैं जैसे ता नूम त ना ना दे रे ना।

2. गीत, गान।

प्रामाणिक हिन्दी कोश–आचार्य रामचन्द्र वर्मा

गायन –

1. (सं.) (स्त्री. गायिनी)।
2. गाने की क्रिया या भाव।
3. गाना, गीत।

मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश–सूर्यनारायण उपाध्याय

(1) शैली –

1. स्त्री (सं.) रीति, प्रथा, रिवाज।
2. चाल, ढंग।

विशे. किसी काम के करने का ढंग, काम करने का तरीका, कार्य करने की रीति या पद्धति, कला, साहित्य आदि की रचना।

मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश–सूर्यनारायण उपाध्याय

(2) शैली –

1. पु. साहित्य, कला आदि की विशिष्ट आकर्षक शैली का निर्माण करने वाला व्यक्ति।

संस्कृत हिन्दी शब्दकोश–वामन शिवराम आप्टे

गायन शैली –

1. स्त्री (सं) गीत/गाने की क्रिया भाव की रीति/प्रथा/रिवाज।

(गायन **+** शैली– संयुक्त अर्थ)

घराना –

1. पु. कुल, वंश, किसी विद्या–कला के लिए प्रसिद्ध।
2. पु. रंग–ढंग, चाल–ढाल।
3. ठौर, ठिकाना, घर–बार

प्रामाणिक हिन्दी कोश– आचार्य रामचन्द्र वर्मा

अध्ययन का महत्त्व

प्रस्तावित शोध अल्प प्रचलित व अप्रचलित गायन शैली को प्रकाश में लाने के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। अध्ययन का महत्त्व इस तथ्य पर भी आधारित है कि शोधोपरांत तराना गायन शैली का ध्वन्यांकन के माध्यम से संरक्षण हो सकेगा। विभिन्न अप्रकाशित बन्दिशें, जो हस्तलिखित रूप से आगरा घराने में लगभग नष्ट होने के कगार पर हैं, प्रकाश में आएंगी। तराना गायन शैली की रचना किस प्रकार की जाती है? विभिन्न कलाकारों द्वारा विशिष्ट बिन्दुओं के आधार पर साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर उन्हें प्रकाश में लाना भी महत्त्वपूर्ण कार्य है। अध्ययन का महत्त्व इस तथ्य की ओर भी इंगित करता है कि तराना गायन शैली का समग्र विवरण एक साथ शोधार्थियों, विद्यार्थियों को प्राप्त हो सकेगा।

अध्ययन के उद्देश्य :

- ❖ तराना गायन शैली की ऐतिहासिकता को जानना।
- ❖ आगरा घराने में गेय तराना गायन शैली का क्रियात्मक एवं सैद्धान्तिक रूप से अध्ययन करना।
- ❖ आगरा घराने में तराना गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- ❖ तराना गायन शैली के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन करना।
- ❖ तराना गायन शैली के अप्रचलित अथवा अल्प प्रचलित कारणों को खोजना।
- ❖ तराना गायन शैली के प्रमुख गायकों की खोज करना।

- ❖ तराना गायन शैली की बन्दिशों को ध्वन्यांकित करना।
- ❖ इस गायन शैली की पूर्व ध्वन्यांकित बन्दिशों को खोजना।
- ❖ तराना गायन शैली की बन्दिशों को विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त कर संकलित करना।
- ❖ आगरा घराने में गेय तराना गायन शैली में व्यवहृत बन्दिशों को साक्षात्कार के पश्चात् स्वरलिपिबद्ध करना।
- ❖ आगरा घराने में गेय कतिपय रागों में निबद्ध तरानों का संकलन करना।
- ❖ तराना गायन शैली में स्वनिर्मित बन्दिशों का संकलन करना।

विषय परिसीमांकन :

कार्य एवं समय सीमा को देखते हुए तराना गायन शैली को पच्चीस रागों तथा दस कलाकारों तक ही सीमित कर दिया जाएगा।

कार्य विधि एवं उपकरण :

प्रस्तुत शोध प्रबंध हेतु व्याख्यात्मक एवं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा तथा विभिन्न पुस्तकालयों जैसे संगीत नाटक अकादमी दिल्ली से, दयालबाग़ पुस्तकालय आदि से सामग्री एकत्रित की जायेगी, पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा भी जानकारी प्राप्त की जायेगी। विभिन्न विद्वानों एवं कलाकारों का साक्षात्कार करने हेतु टेपरिकॉर्डर, कैसेट्स, कैमरा, सी.डी., ध्वन्यांकन सामग्री आदि जैसे उपकरणों तथा शोध उपकरणों के अन्तर्गत साक्षात्कार एवं प्रश्नावली जैसे शोध उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

शोध प्रबंध के अध्यायों का प्रस्तावित विभाजन :

भूमिका

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय; समस्या का उद्भव; अध्ययन का औचित्य; सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण; विषय कथन; विषय में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या; अध्ययन के उद्देश्य; अध्ययन का महत्व; विषय परिसीमांकन; अध्ययन की कार्यप्रणाली; अध्ययन के उपकरण।

द्वितीय अध्याय

(i) आगरा घराने का ऐतिहासिक परिचय
(ii) तराना गायन शैली का ऐतिहासिक परिचय

तृतीय अध्याय

(i) आगरा में व्यवहृत तराना गायन शैली
(ii) तराना गायन शैली के प्रमुख गायक

चतुर्थ अध्याय

(i) आगरा में व्यवहृत तराना गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन

पंचम अध्याय

(i) विभिन्न ध्वन्यांकित तरानों का संकलन

(ii) विभिन्न प्रकाशित तरानों का संकलन

(iii) साक्षात्कार द्वारा प्राप्त तरानों का संकलन

षष्ठम् अध्याय

(i) तराना गायन शैली में स्वनिर्मित बन्दिशों का संकलन करना

निष्कर्ष

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. उपाध्याय, सूर्यनारायण, मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश, कमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली; 2005
2. गर्ग, लक्ष्मीनारायण, संगीत तराना अंक, संगीत कार्यालय हाथरस; 1968
3. गर्ग, लक्ष्मीनारायण, हमारे संगीतरत्न, संगीत कार्यालय हाथरस; 1957
4. मेहता, रमण लाल, आगरा घराना परंपरा गायकी और बंदिशें, भारतीय संगीत नृत्य–नाट्य, बड़ौदा; 1969
5. रातंजनकर, श्री कृष्ण नारायण, अभिनव गीत मंजरी भाग 2, पॉप्युलर बुक डिपो, लैमिंग्टन रोड़ बम्बई; 1961
6. वर्मा, आचार्य रामचन्द्र, प्रामाणिक हिन्दी शब्द कोश, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद; 1996
7. शर्मा, भगवत शरण, हिन्दुस्तानी संगीत शास्त्र, प्रकाशन शिवानंद मंदिर, खुरजा 3–4
8. हुसैन खाँ, उ॰ विलायत, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली; 2002

पत्र–पत्रिकायें

1. संगीत कला विहार जून 1994ः डॉ. वीणा सहस्त्रबुद्धे पृष्ठ.सं. 7 तराने का अन्य गीत शैलियों, वादन एवं नृत्य से संबंध।
2. संगीत कला विहार आर्टीकल अगस्त 1993ः डॉ. वीणा सहस्त्रबुद्धे पृष्ठ.सं. 11 तराने की उत्पत्ति स्वरूप एवं मर्यादा।